ईमानदार अब्राहम

लेखन : एडिथ कुनहार्ट

चित्र-सज्जा : मालका ज़ेल्दिस

ईमानदार अब्राहम

लेखन : एडिथ कुनहार्ट

चित्र-सज्जा : मालका ज़ेल्दिस

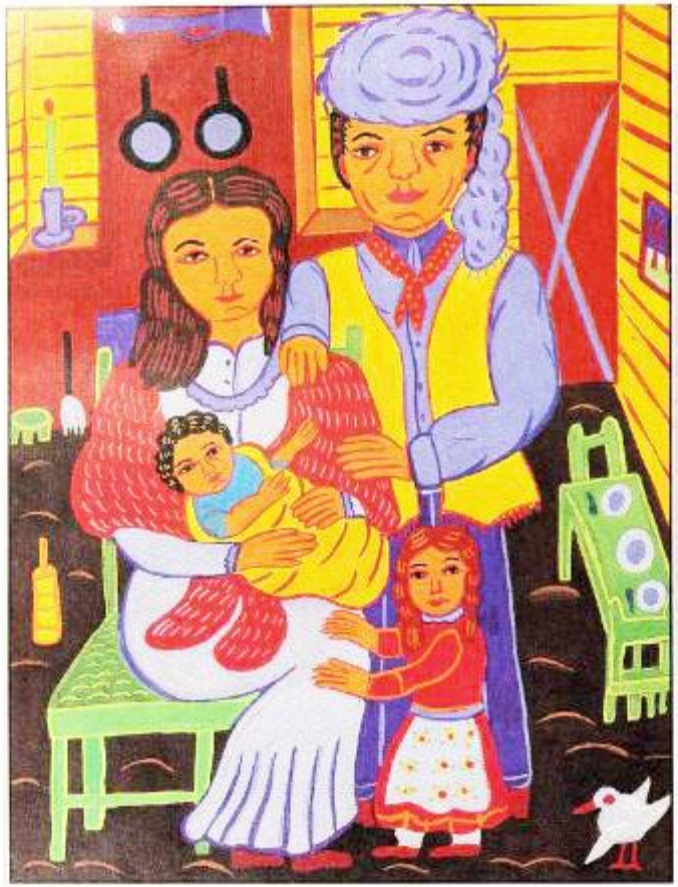

अब्राहम लिंकन का जन्म केंटकी में एक लकड़ी से बने छोटे से घर में हुआ था। उसके माता पिता, थॉमस और नैन्सी लिंकन निर्धन थे। उसके पिता एक बढ़ई का काम करते और खेती भी करते थे, और माँ खेतों में उनकी सहायता करती थी। उसके माता पिता दोनों ही अनपढ़ थे।

अब्राहम की एक बड़ी बहन थी, सारा। जब उन दोनों की स्कूल जाने की उम्र हुई, तो वह और सारा दो मील पैदल चल कर एक कमरे के स्कूल में पढ़ने जाते थे। सभी कक्षाओं के छात्र एक ही कमरे में बैठते थे। अब्राहम लिंकन ने कुल मिला कर केवल एक साल स्कूली शिक्षा ग्रहण की। लेकिन वह शिक्षा पाने के लिए बहुत जिज्ञासु था, और उसने स्वयं ही पढ़ना जारी रखा।

जब अब्राहम सात वर्ष का हुआ, उसका परिवार सौ मील दूर इंडिआना को चला गया। अपने घर का सारा सामान बांध कर वे दो घोड़ों पर सवार हो कर जंगल के बीच से इस यात्रा पर निकल पड़े। जिस जंगल से होकर उन्हें गुज़ारना था, उसमें भेड़िये और भालू रहते थे।

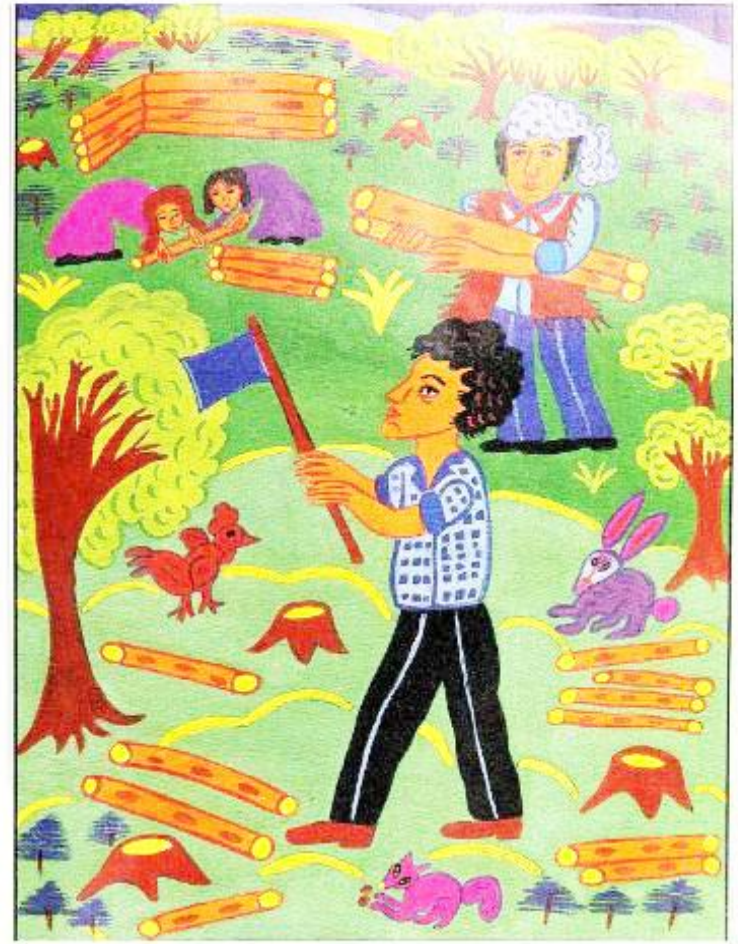

इंडियना पहुँच कर अब्राहम ने लकड़ी का एक घर बनाने में अपने पिता की सहायता की, जिसमें पूरा एक वर्ष लग गया। उस घर में एक कमरा था, और फर्श मिटटी का था। जब घर बन कर तैयार हुआ, तो अब्राहम को घर की टांड पर सोने की जगह दी गई। गद्दे के नाम पर उसके लिए केवल सूखी पत्तियों का एक ढेर था।

दो वर्ष बाद अब्राहम की माँ की मृत्यु हो गई। अब्राहम अपने चचेरे भाई डेनिस के साथ खेलता था, जो उसके घर आकर रहने लगा था। लेकिन कुछ भी पहले जैसा नहीं था।

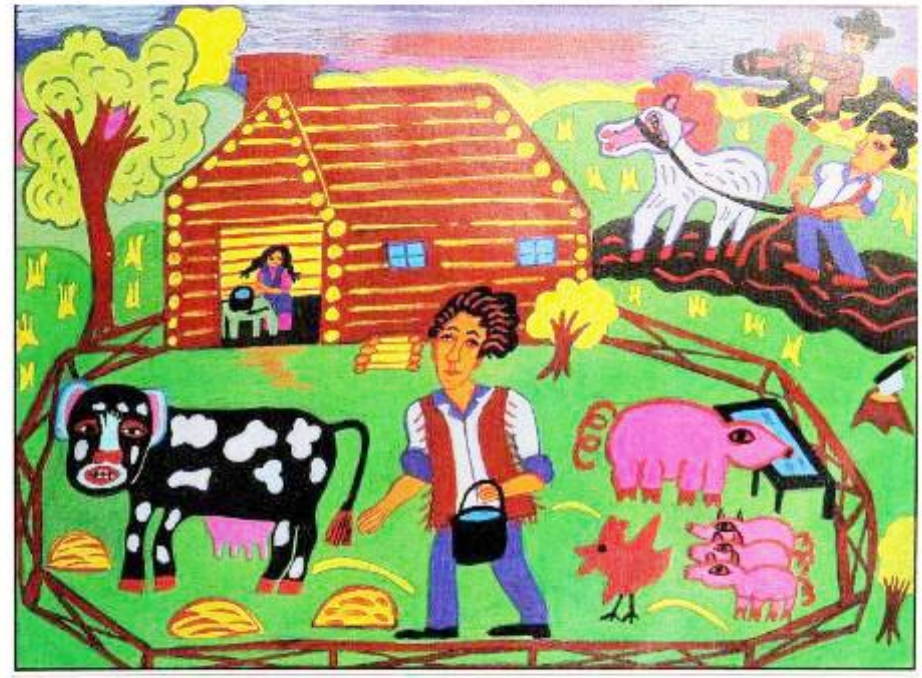

एक साल और बीत गया, और फिर थॉमस लिंकन तीनों बच्चों को घर में अकेला छोड़ कर केंटकी वापस चला गया।

कई हफ्ते बाद वह एक नई पत्नी के साथ वापस लौटा, जिसका नाम भी सारा था, लेकिन थॉमस उसे सैली नाम से बुलाता था। वह अपने साथ अपने तीन बच्चे और अपने पुराने घर का फर्नीचर लेकर आई थी।

अब्राहम को सैली अच्छी लगी, और सैली भी उसके प्रति स्नेह रखती थी। उसने थॉमस से कह कर घर में लकड़ी का फर्श बनवाया, और घर की टपकती छत भी ठीक करवाई। अब उस एक कमरे में आठ लोग रहते थे।

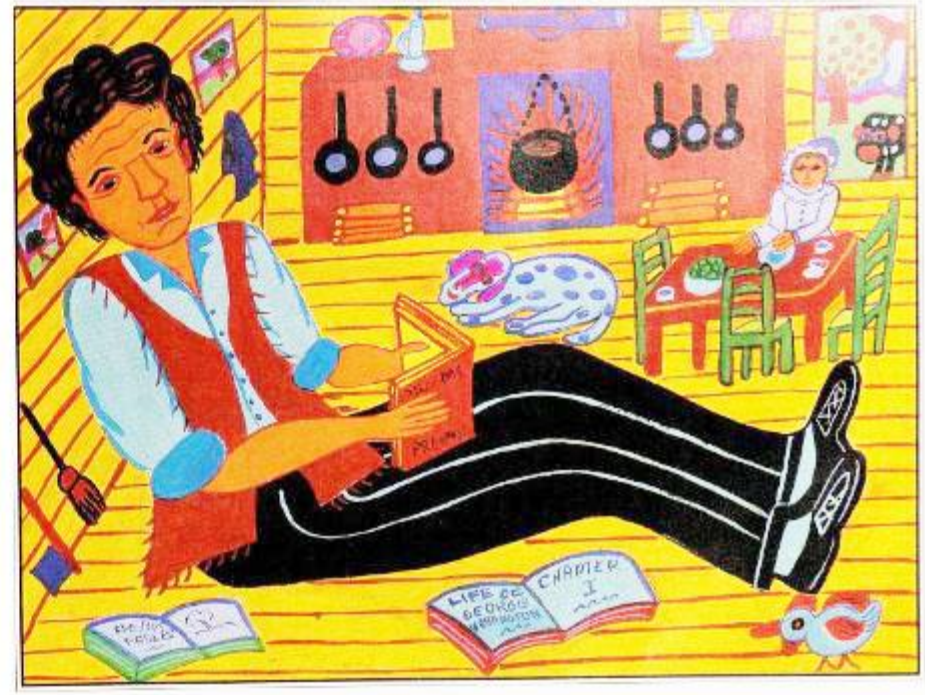

रात को सैली अब्राहम की पढाई में उसकी सहायता करती। वह अंगीठी में लकड़ियां जला कर उसकी रौशनी में पढाई करता था। उसने जॉर्ज वाशिंगटन के बारे में पढ़ा। उसने बाइबिल भी पढ़ी। अक्सर वह कवितायेँ लिखता। उसने खुद से पढ़ना लिखना जारी रखा।

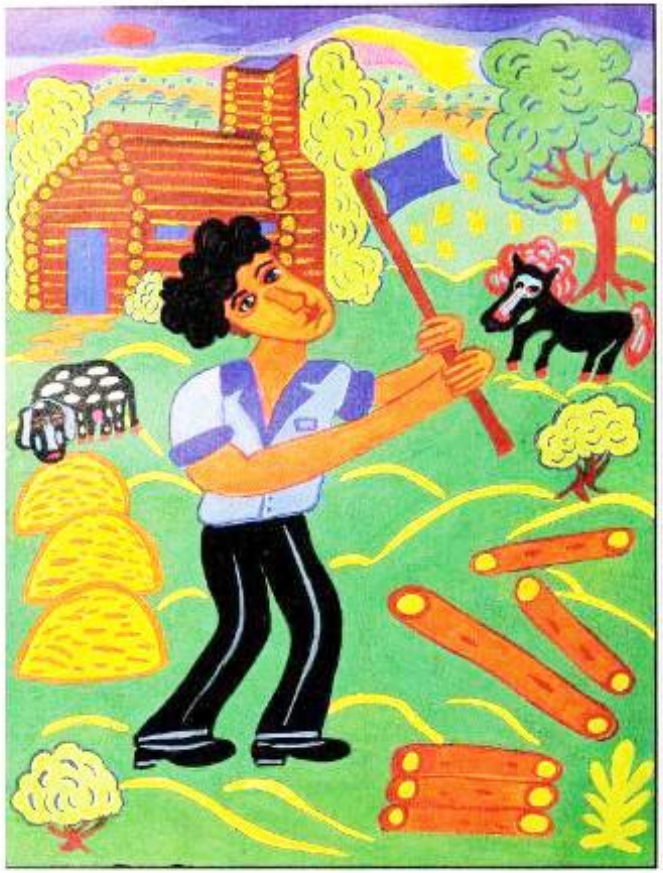

अब्राहम अब लम्बा और ताकतवर हो गया था। उसके पिता उसे दूसरे किसानों के खेतों में २५ सेंट प्रतिदिन के हिसाब से काम करने के लिए भेजते। वह पेड़ों को काट कर ईंधन के लिए लकड़ी लाता, और पेड़ के तनों को चीर कर घरों की चहारदीवारी बनाता। वह एक बहुत अच्छा कामगार था। कभी कभी वह कटे पेड़ के तने पर बैठ जाता और लोगों को मज़ेदार कहानियां और लतीफे सुनाता। लोग उसकी बातें बड़ी चाव से सुनते थे।

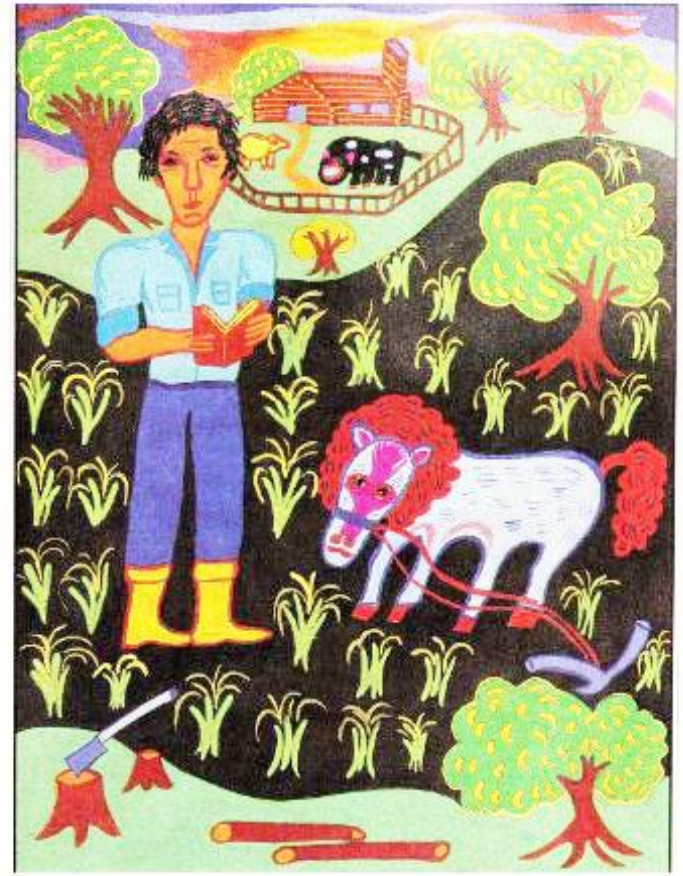

अब्राहम की जेब में या उसके हाथों में लगभग हमेशा कोई किताब ज़रूर रहती थी। वह खेत जोतते समय भी अपने साथ कोई किताब रखता था। मक्का के खेत की आधी जुताई करने के बाद जब उसका घोडा आराम करता तो वह अपनी किताब पढ़ने लगता।

जब वह उन्नीस वर्ष का था, उसकी लम्बाई छः फुट चार इंच हो गई थी। उसका वज़न २०० पौंड से भी अधिक था, और वह एक तेज़ तैराक और मज़बूत पहलवान था।

अब्राहम मिसिसिपी नदी में नौका चलाने का काम करता था। इन नौकाओं में सूअरों और मक्का की फसल को बाजार ले जाया जाता था।

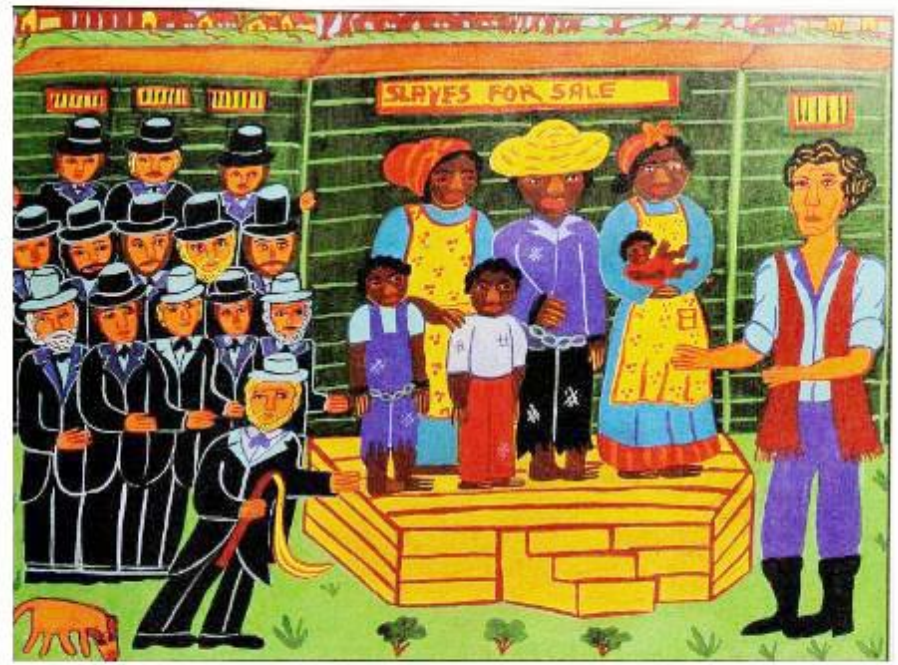

नदी मार्ग से यह नौका न्यू ओरलींस को जाती थी। वहां अब्राहम ने कुछ गुलामों को देखा। इन अश्वेत लोगों को उनके काम के लिए कोई वेतन नहीं दिया जाता था। गोरे लोग उनके स्वामी थे, और उन्हें बेच सकते थे। अब्राहम को लगा कि यह बहुत गलत हो रहा है।

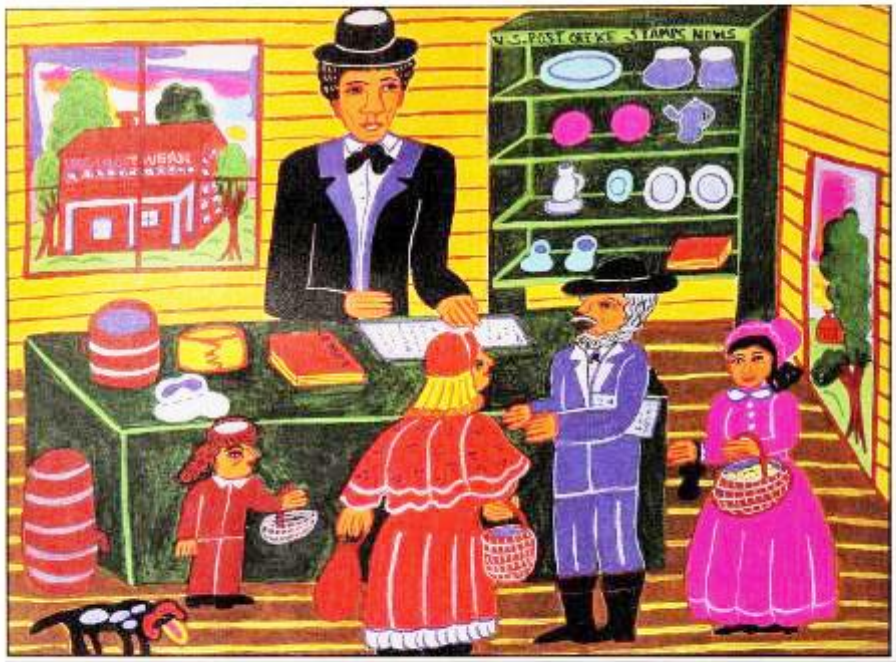

जल्दी ही अब्राहम न्यू ओरलींस से वापस लौट आया। फिर थॉमस लिंकन अपने परिवार समेत इलेनॉइस चला गया। और उसके तुरंत बाद ही अब्राहम ने घर छोड़ दिया। वह इलेनॉइस के एक छोटे शहर न्यू सेलम को चला गया, जहाँ वह एक दूकान में काम करने लगा। जल्दी ही लोग उस दुकान में अब्राहम की कहानियां सुनने के लिए आने लगे।

लोग उसे एब या ईमानदार एब कह कर बुलाते। एक बार एक महिला ने उसे कीमत से सवा छः सेण्ट अधिक दे दिए। और वह उसे खोज कर उसके पैसे लौटाने के लिए तीन मील पैदल चल कर गया।

एब ने न्यू सेलम में अनेक छोटे-छोटे काम किये। उसने डाकिया बन कर डाक बांटी, और ज़मीन के सर्वेक्षण का काम भी किया।

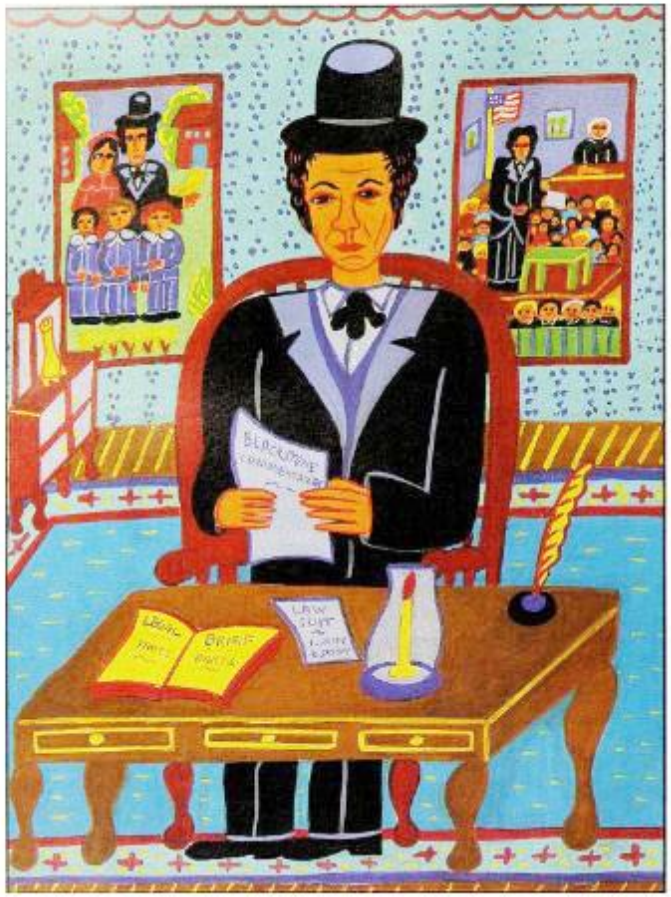

एब को कचहरी में जाकर वकीलों की जिरह सुनना बहुत अच्छा लगता था। बहुत से लोग उसके पास सलाह लेने के लिए आते थे। फिर उसने खुद वकील बनने का निश्चय किया। उसने मेहनत से पढाई की। रातों को जाग कर काम किया, और तीन वर्ष में वह एक वकील बन गया।

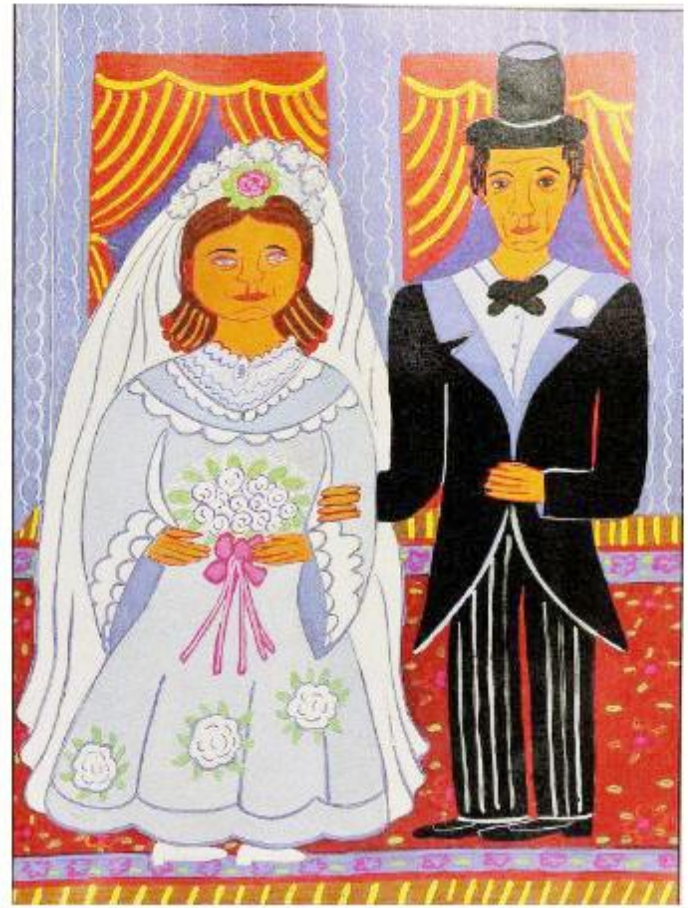

फिर एब स्प्रिंगफ़ील्ड इलेनॉइस चला गया, जहाँ उसकी मुलाकात मेरी टॉड से हुई। मेरी की उम्र इक्कीस वर्ष की थी, और एब तीस का था। मेरी बहुत लोकप्रिय थी। वह फ्रेंच भाषा बोलती थी, और उसे नृत्य करना बहुत पसंद था। फिर एब और मेरी का विवाह हो गया।

एब एक लम्बा रेशमी हैट पहनता था, जिसमें वह अपने कागज़ात वगैरा रखता था। कभी-कभी जब वह हैट उतरता, तो ये कागज़ ज़मीन पर गिर जाते थे। एब का दफ्तर स्प्रिंगफ़ील्ड में था। लेकिन वह लोगों की क़ानूनी मदद करने दूर-दराज़ के छोटे शहरों और कस्बों में भी जाता था। उसके बहुत से मित्र बन गए थे। फिर उसने अमेरिकी संसद (Congress) का चुनाव लड़ा, और विजयी हुआ।

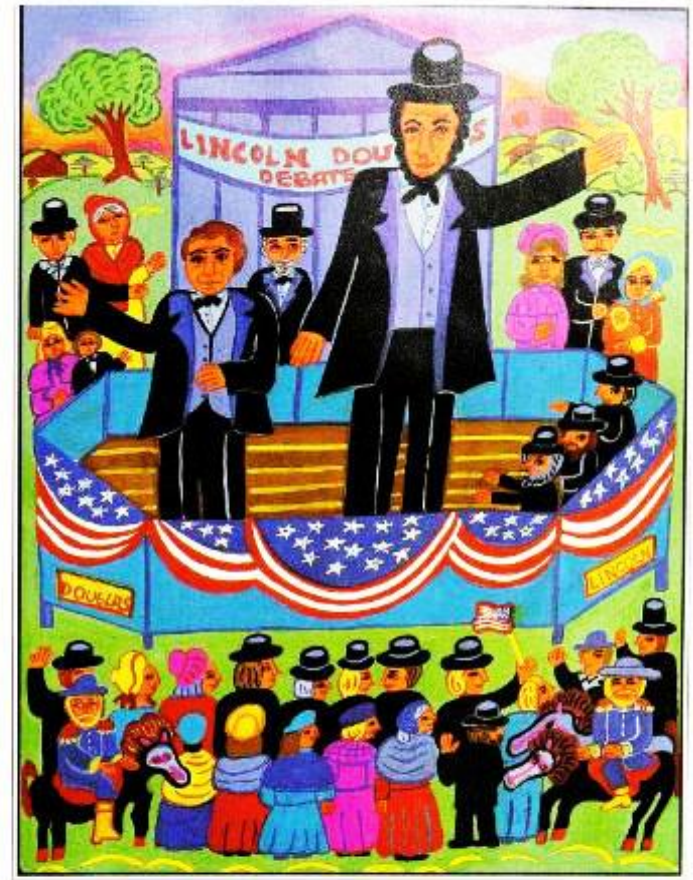

कुछ साल बाद उसने अमेरिकी सीनेट का चुनाव लड़ने का निश्चय किया। इस चुनाव में उसके प्रतिद्वंदी थे स्टीफेन डगलस। डगलस का मानना था कि दास-प्रथा जारी रहनी चाहिए। लेकिन लिंकन का मत था कि दास-प्रथा का अंत होना चाहिए। दोनों ने पूरे इलेनॉइस प्रान्त का दौरा करके जनता के बीच इस विषय पर बहस की। जब लोगों ने मतदान किया, तो जीत डगलस हुई, लेकिन इस बहस के कारण लिंकन की प्रसिद्धि बहुत बढ़ गई।

दो साल बाद फिर डगलस और लिंकन के बीच एक बार फिर चुनावी मुक़ाबला हुआ। इस बार मुकाबला अमेरिका के राष्ट्रपति पद के लिए था, और लिंकन की विजय हुई। एब, मेरी और उनके तीन बेटे अब वाशिंगटन डी. सी. के वाइट हाउस में जाकर रहने लगे।

तीनों लड़कों को यह घर बहुत अच्छा लगा। वे उसकी छतों पर खेलते, उसके लॉन में घुड़सवारी करते, और अपनी बकरियों के पीछे गलियारों में दौड़ते फिरते।

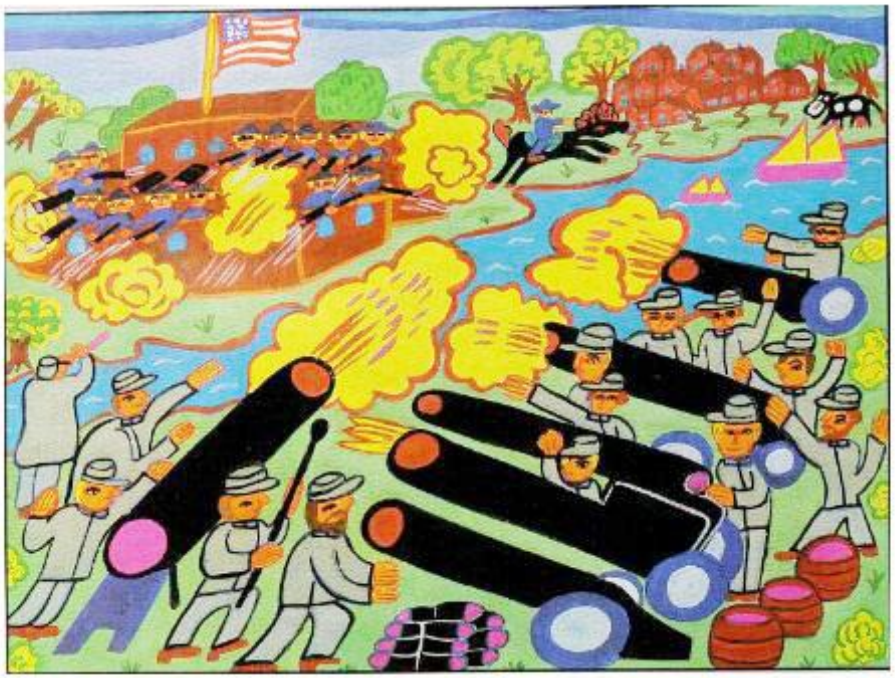

अब्राहम लिंकन के राष्ट्रपति बनने के दो हफ्ते बाद ही गृह-युद्ध शुरू हो गया। इस युद्ध में एक ओर उत्तरी प्रांतों में रहने वाले लोग थे, जिनमे से अधिकांश मानते थे कि दास-प्रथा समाप्त होनी चाहिए, और दूसरी ओर दक्षिणी राज्यों के लोग थे, जिनमें बहुमत उन लोगों का था जो दास-प्रथा जारी रखना चाहते थे।

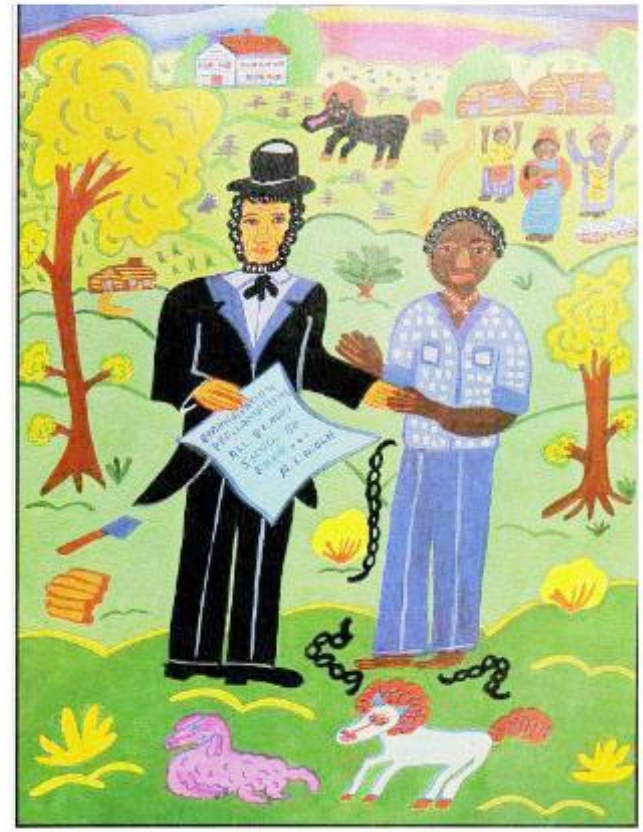

लगभग दो वर्ष बीत गए। इस युद्ध में हज़ारों सिपाही मारे जा चुके थे, और ऐसा लग रहा था कि विजय दक्षिणी राज्यों की होगी। संयोगवश इसी समय राष्ट्रपति के १२ वर्षीय बेटे विली की मृत्यु हो गई। ऐसे मुश्किल समय में लिंकन ने गुलामों की आज़ादी की उद्घोषणा पर हस्ताक्षर कर दिए। यह एक बहुत महत्वपूर्ण कदम था, जिसके कारण आगे चल कर दास-प्रथा की समाप्ति हुई। दो वर्ष बाद संविधान के तेरहवें संशोधन ने अमेरिका में दास-प्रथा पर हमेशा के लिए प्रतिबन्ध लगा दिया।

लेकिन युद्ध जारी रहा। पेनसिलवेनिया के एक छोटे शहर गैटिसबर्ग में एक भयंकर युद्ध हुआ। हज़ारों सैनिक इसमें मारे गए।

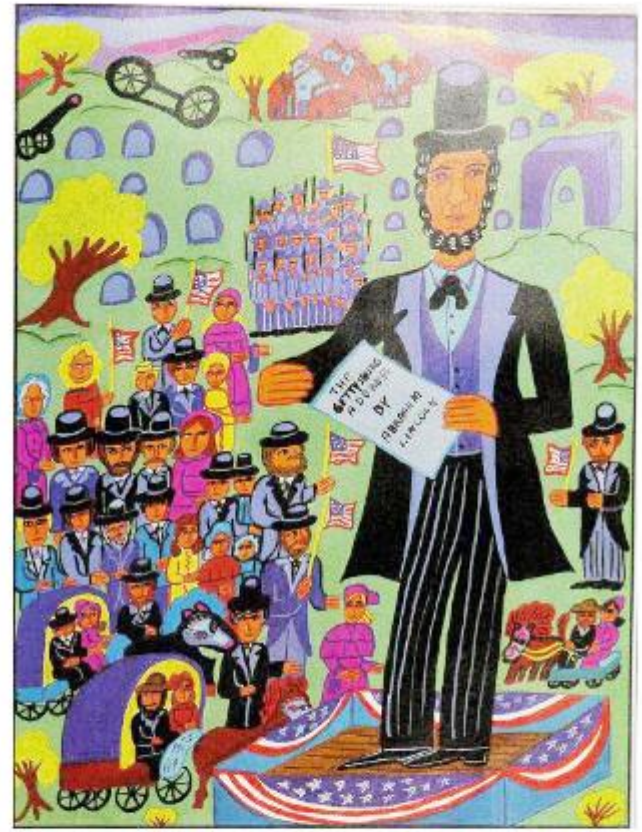

पांच महीने बाद राष्ट्रपति लिंकन ने युद्धभूमि में जाकर मृत सैनिकों के लिए एक कब्रिस्तान का लोकार्पण किया। वहां उन्होंने एक व्याख्यान दिया, जो मात्र दो मिनट का था, लेकिन जिसे गैटिसबर्ग व्याख्यान के नाम से जाना गया, और यह अमेरिकी इतिहास के सबसे प्रसिद्ध व्याख्यानों में से एक बन गया। उन्होंने कहा कि इस युद्ध में शहीद हुए वीर सैनिकों को जनता कभी नहीं भुलायेगी, और जनता द्वारा चुनी हुई और उनके लिए काम करने वाली सरकार इस धरती पर हमेशा बनी रहेगी।

यह युद्ध चार वर्ष बाद जाकर समाप्त हुआ। "मैं जीवन में इतना प्रसन्न कभी नहीं हुआ", राष्ट्रपति ने कहा।

पांच दिन बाद राष्ट्रपति और उनकी पत्नी रंगमंच का एक कार्यक्रम देखने गए। कार्यक्रम के दौरान एक व्यक्ति ने, जो गुलामों को आज़ादी मिलने के कारण राष्ट्रपति से अत्यंत क्रुद्ध था, पीछे से राष्ट्रपति से सर में गोली मार थी। यह गोली सीधे उनके मस्तिष्क में चली गई।

पूरी रात राष्ट्रपति अचेत रहे, और सुबह उनकी मृत्यु हो गई।

उनके शरीर को एक ताबूत में लेटा कर वाइट हाउस में रखा गया। बहुत से लोग उनके निधन पर अश्रुपूर्ण नेत्रों से विलाप कर रहे थे ।

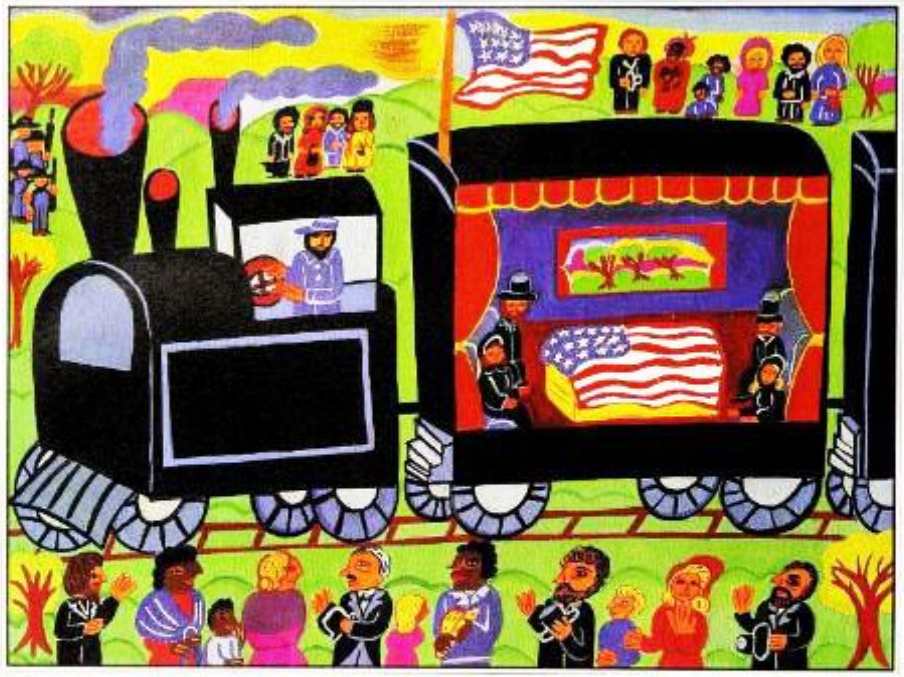

राष्ट्रपति लिंकन के पार्थिव शरीर को एक रेलगाड़ी से वापस इलेनॉइस ले जाया गया। रेल की पटरी के दोनों ओर खड़े हज़ारों लोगों ने उन्हें अंतिम विदाई दी। रेल के मार्ग में दस अलग अलग शहरों में उनके मृत्यु संस्कार के कार्यक्रम आयोजित किये गये। अंत में रेल स्प्रिंगफ़ील्ड पहुंची, जहाँ उन्हें दफनाया गया। ईमानदार एब आखिर वापस अपने घर पहुँच गया था।

गैटिसबर्ग का व्याख्यान

सत्तासी वर्ष पहले हमारे पुरखों ने इस महाद्वीप में एक नए राष्ट्र की स्थापना की थी, जिसकी परिकल्पना व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर आधारित थी, और इस सिद्धांत के प्रति समर्पित थी कि सभी इंसानों को विधाता ने बराबर का बनाया है।

इस समय हमारा देश एक व्यापक गृह-युद्ध से जूझ रहा है, और यह इस बात की परीक्षा है, कि यह देश, या कोई भी देश जो ऐसी परिकल्पना पर आधारित हो, लम्बे समय तक टिक सकता है, या नहीं। आज हम इस महान युद्ध की रणभूमि में यह परीक्षा दे रहे हैं। आज इस रणभूमि के एक छोटे हिस्से पर हम उन शहीदों को अंतिम विश्राम दे रहे हैं, जिन्होंने इस राष्ट्र के लिए अपने अपने प्राणों की आहुति दी है। उनको यह सम्मान देना हमारा परम दायित्व है।

लेकिन यदि वास्तव में देखा जाये तो इस धरती को पवित्र और सम्मानित बनाने वाले हम सब नहीं, बल्कि वे लोग हैं जिन्होंने इस धरती पर युद्ध किया है, और जिनमे से कुछ ने अपने प्राणों का उत्सर्ग किया है। आज हम जो कुछ यहाँ कह रहे है, संसार शायद ही उस पर ध्यान दे या उसे याद रखे, लेकिन उन वीरों की करनी को संसार कभी नहीं भुलायेगा। इन महान योद्धाओं ने जिस उद्देश्य के लिए अपने प्राण दिया हैं, यह हम सब का दायित्व है, कि हम पूरी लगन और समर्पण के साथ उसकी प्राप्ति के लिए यत्न करें। हमें यह प्रण करना है, कि इस वीरों का बलिदान व्यर्थ न जाने पाए, और ईश्वर की कृपा से इस राष्ट्र का एक नया जन्म हो। जनसाधारण के लिए समर्पित और उन्हीं के द्वारा संचालित यह शासनतंत्र इस धरती पर निश्चय ही चिरस्थायी बनेगा।

अब्राहम लिंकन की जीवन रेखा

१२ फरवरी, १८०९	हार्डिन काउंटी, केंटकी में जन्म।
नवम्बर, १८१६	परिवार का केंटकी से इंडिआना को गमन।
५ अक्टूबर, १८१८	माँ का स्पेंसर काउंटी, इंडिआना में निधन।
२ दिसंबर, १८१९	एलिज़ाबेथ टाउन, केंटकी में पिता का सारा जॉन्स्टन से विवाह।
१ मार्च, १८३०	परिवार का इंडिआना से इलेनॉइस को स्थानांतरण।
जुलाई, १८३०	न्यू सेलम, इलेनॉइस को प्रस्थान।
२१ अप्रैल, १८३२	ब्लैक हॉक युद्ध में कप्तान पद पर नियुक्ति।
४ अगस्त, १८३४	इलेनॉइस राज्य की विधान सभा के लिए निर्वाचित।
१२ अप्रैल, १८३७	स्प्रिंगफ़ील्ड, इलेनॉइस में वकालत कार्य की शुरुआत।
४ नवम्बर, १८४२	मेरी ऐन टॉड से विवाह।
अगस्त, १८४२	अमेरिकी संसद के लिए निर्वाचित।
२ नवम्बर , १८५८	अमेरिकी सीनेट के चुनाव में स्टीफेन डगलस से हारे।
१८ मई, १८६०	राष्ट्रपति पद के लिए रिपब्लिकन पार्टी द्वारा मनोनीत।
६ नवम्बर, १८६०	अमेरिकी राष्ट्रपति पद के लिए निर्वाचित।
१२ अप्रैल, १८६१	अमेरिकी गृह युद्ध की शुरुआत।
१ जनवरी, १८६३	गुलामों की आज़ादी के अध्यादेश पर हस्ताक्षर।
१९ नवम्बर, १८६३	गैटिसबर्ग व्याख्यान।
८ नवम्बर, १८६४	राष्ट्रपति पद के लिए दोबारा निर्वाचित।
९ अप्रैल, १८६५	गृह युद्ध का अंत।
१४ अप्रैल, १८६५	जॉन विल्क्स बूथ ने वाशिंगटन डी. सी. के फोर्ड थिएटर में गोली मारी।
१५ अप्रैल, १८६५	५६ वर्ष की आयु में मृत्यु।
४ मई, १८६५	स्प्रिंगफ़ील्ड इलेनॉइस में अंतिम संस्कार।